भारत सरकार

कोयला मंत्रालय

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या : 838

जिसका उत्तर 08 दिसंबर, 2025 को दिया जाना है

सीआईएल डिस्पैच का डिजिटलीकरण और रेल संपर्क

838. श्रीमती संगीता यादव:

क्या कोयला मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) पारदर्शिता बढ़ाने के लिए कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) के सभी प्रेषण और बिलिंग अभिलेखों को डिजिटल करने के संबंध में क्या प्रगति हुई है;
(ख) सरकार खान निकास और उपभोग बिंदुओं पर कोयला भंडार की स्थिति पर नज़र रखने के लिए जीआईएस मानचित्रण का किस प्रकार उपयोग कर रही है;
(ग) क्या कोयले के सड़क द्वारा परिवहन को कम करने के लिए सभी फर्स्ट-माइल कनेक्टिविटी परियोजनाओं को पूरी तरह से क्रियाशील कर दिया गया है, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है, यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और
(घ) लदान स्थलों पर कोयला रेकों के प्रतीक्षा समय को कम करने के लिए कौन-कौन सी नई पहल की गई हैं?

उत्तर

कोयला एवं खान मंत्री
(श्री जी. किशन रेड्डी)

(क) : कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) की प्रत्येक सहायक कंपनी के सभी वेब्रिज पारदर्शिता बढ़ाने के लिए सीआईएल के ईआरपी में प्रेषण डाटा और बिलिंग रिकार्ड पारेषित करने के लिए सीआईएल की उद्यम संसाधन योजना (ईआरपी) प्रणाली से जुड़े हुए हैं। रेल वेब्रिजों को रेलवे की मालभाड़ा प्रचालन सूचना प्रणाली (एफओआईएस) से जोड़ा जाता है ताकि उनकी प्रणाली में डाटा कैप्चर किया जा सके। ईआरपी डेटा का उपयोग बिलिंग रिकॉर्ड बनाने के लिए किया जाता है और बिलों को स्वचालित ईमेल प्रणाली के माध्यम से सीधे उपभोक्ता की ईमेल आईडी पर ईमेल किया जाता है।

(ख) : सीआईएल पिट हेड और प्रेषण स्थलों पर कोयले के स्टॉक को ट्रैक करता है। फिलहाल, सभी पिट हेड और साइडिंग कोल स्टॉक स्थानों को सीआईएल-ईआरपी प्रणाली में मानचित्रण किया जाता है। कोयले के भंडार की स्थिति की सीआईएल के सभी स्तरों पर आधुनिक सर्वेक्षण उपकरणों के माध्यम से आवधिक रूप से जांच की जाती है और निगरानी रखी जाती है।

(ग) : कोयला मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2029-30 तक 1319 एमटीवाई (मिलियन टन प्रति वर्ष) क्षमता वाली 139 फर्स्ट-माइल कनेक्टिविटी (एफएमसी) परियोजनाएं स्थापित करने की योजना बनाई है, जिसमें सीआईएल - 92 परियोजनाएं, एससीसीएल - 15 परियोजनाएं, एनएलसीआईएल - 5 परियोजनाएं और कैप्टिव/वाणिज्यिक - 27 परियोजनाएं शामिल हैं। वर्तमान में, 552 एमटीवाई की क्षमता वाली 65 एफएमसी परियोजनाएं (सीआईएल-43, एससीसीएल-12, कैप्टिव/वाणिज्यिक - 10) प्रचालनरत हैं। एफएमसी की आयोजना और चालू करने की समय-सीमा खान योजनाओं में परिकल्पित उत्पादन के अनुसार है।

(घ) : लदान साइडिंग पर कोयला रेकों के प्रतीक्षा समय को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए गए हैं -

i. एफएमसी परियोजनाओं के माध्यम से मशीनीकृत और साइलो-आधारित रैपिड लोडिंग सिस्टम का विस्तार।

ii. आवश्यकता के अनुसार रेक को समय पर लगाने और निकालने के लिए भारतीय रेलवे के साथ समन्वय को मजबूत करना।

iii. लोडिंग प्लेटफार्मों का विस्तार करके, प्लेटफॉर्म की ऊंचाई बढ़ाकर और पटरियों को मजबूत करके साइडिंग अवसंरचना का उन्नयन करना, साथ ही जल निकासी, प्रकाश व्यवस्था, सिग्नलिंग, सड़क संपर्क और सुरक्षा प्रणालियों में सुधार करना ताकि रेक संचालन को तीव्र, सुरक्षित और अधिक कुशल बनाया जा सके।

iv. खानों से साइडिंग तक कोयले की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित करने, पर्याप्त स्टॉक बनाए रखने और रेक-अवरोध को कम करने के लिए परिवहन और लॉजिस्टिक्स योजना को मजबूत करना।

v. अवरोध संबंधी मामलों की नियमित समीक्षा और निगरानी।

****